प्राचीन भारतीय ग्रन्थ में चित्रकला उल्लेख

निशा माहौर¹

¹शोधार्थिनी (जे.आर.एफ.) चित्रकला विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़।

योध सारांश
प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में चित्रकला से सम्बन्धित नियमों का उल्लेख विस्तृत रूप से मिला है जिसमें काव्य, नाटक, महाकाव्य, पुराण, उपनिषद व विभिन्न विषयों के ग्रन्थों द्वारा भारतीय चित्र लेखन की प्राचीन परम्परा व सांस्कृतिक विधियों व ज्ञानमानस में उनकी लोकप्रियता का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे ग्रन्थ भी हैं, जिनमें स्वतंत्र व व्यापक रूप से चित्रकला की आधारित विषयांक रूप से की गयी है। उदाहरण के लिए विश्वसनीय पुराण भारत का परम्परागत उल्लेख इस ग्रन्थ में 269 अध्याय है। जिसके अन्तर्गत तीसरे खण्ड में संक्षिप्त विषयों में विशेषकर ललित कलाओं के लिये संबंधित महत्वपूर्ण हैं। जिसमें अध्याय 1 से लेकर 118 तक कला के बारे में बताया गया है, इस ग्रन्थ में 35 से 43 तक नौ अध्याय चित्रसूत्र के हैं। यह बहुत चर्चित व सर्वश्रेष्ठ उल्लेखनीय एवं बहुवर्ती है। जिसमें चित्रकला के संबंधित विस्तृत जानकारी दी गयी है, जो इससे पहले अन्य किसी ग्रन्थ में नहीं मिलती।

इसी तरह भारतीय, रामायण, महाभारत में चित्रशालाओं, महात्मा, रथों पर चित्रकार का वर्णन मिलता है 

इन प्राचीन भारतीय ग्रन्थों के माध्यम से ही आज चित्रकला कलाकृतियों का अध्ययन सुक्ष्मरूप से करने में सक्षम हो सकता है। अर्थात् इन ग्रन्थों में चित्र के सम्बन्धित नियमों का पालन अजन्ता, मुम्ल, राजेंद्र के लघु 

यह व्याख्या इसके अध्यायों की माहौल में सूक्ष्मरूप के काव्य के साथ रघुवर के साथ ही है। इन नियमों का पालन करने वाले ही चित्रकार अपनी कलाकृतियों में संमस्त, सन्तुलन व सहयोग, प्रभावित बुलाकर व्याख्या करते हुए अपनी कलाकृति को अभिव्यक्त कर पाने में समर्थ हो सकते हैं। जिसका उदाहरण संगीतीकरण या अन्य कलाकृति में देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द – चित्र, ग्रन्थ, महाकाव्य, नाटक।

इसी ग्रन्थ के 35 से 43 तक नौ अध्याय चित्रसूत्र के हैं। यह ग्रन्थ चित्रकला की विस्तृत जानकारी के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण व बहुज्ञ ग्रन्थ है। कला की जितनी जानकारी इस ग्रन्थ में मिलती है, अन्य किसी में नहीं है।

चित्रसूत्र में वर्णित नौ अध्यायों में (1) आयाममान वर्णन, (2) प्रमाण वर्णन, (3) सामान्यमान वर्णन, (4) प्रतिमालक्षण, (5) श्रेयवृद्धि, (6) रंग व्यतिकर, (7) वर्तना, (8) रूप-निर्माण, (9) श्रुगारभाववाद। इन सभी नियमों का प्रयोग अजन्ता के चित्रों में देखने की मिलता है।

चित्रसूत्र से सम्बन्धित कथा के बारे में बताते हुये मार्क्यप्रदेय मुनि राजावत्र को बताया कि नारायण मुनि ने लोगों की हिंतकामना के लिये ही चित्रसूत्र का निरूपण किया था। उन्होंने कहा कि निकट आयी सुर-सुन्दरियों को भ्रमित करने के लिये मुनि ने अतिसुन्दर स्त्री का उत्तम चित्र बनाया। चित्र में स्त्री लावण्यमयी अपस्रा लग रही थी। जिसे देखकर सभी देव-स्तिथियों लक्षित हो गयी। इस प्रकार महामुनि ने चित्रकल्पों से युक्त-चित्र को अच्छत बिश्वकर्मा को सौंप दिया। यहीं से चित्रसूत्र का श्री गणेश हुआ।
चित्रसूत्र में चित्रकला सभी कलाओं में सर्वश्रेष्ठ है। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाला है, जिस पर इसकी प्रतिष्ठा की जाती है, वहाँ पहले ही मंगल होता है- कलाओं प्रवर्तक धर्मकार्मिकोश्त्रद्वम्। / महायण प्रथम चैत्रद्वैशाष्ट्र प्रतिष्ठितम्।। अर्थात्, जैसे पर्वतों में सुमेहु श्रेष्ठ है, पक्षियों में गरुड़ प्रधान है, और मनुष्यों में राजा उत्तम है, उसी प्रकार कलाओं में चित्रकला उत्कृष्ट है। चित्रकला का समस्त रहस्य खोलते हुये चित्र-सूत्रकार कहते हैं कि अच्छे चित्र वहीं हैं, जिनमें माधुर्य, औज, सजीवता व जीवित प्राणियों की भीति चेतनावान व सुशोभित हो।

इसी तरह से महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य मेघदूत व रघुवंश में चित्रकला के बारे में बताते हुये लिखा कि मेघदूत में विहरी यथा अच्छी रूढ़ी हुई नायिका का चित्र गैर से दृश्यार्गे पर भोग लेते हुये कहता है कि मैं पथर की शिला पर तुसारी रूढ़ी हुई मूर्ति का चित्र बनाकर यह बताने का प्रयास कर रहा हूँ कि कुंवर मनाने के लिये मुझे चरणों पर पड़ा है उसकी आँखों में आँसू इतने उमड़े हुये कि चित्र में भी आँसू में आँसू भर जाने के कारण वह उसे देख नहीं पा रहा है।

कालिदास के नाटक मालविकागिरित्र, विक्रमोवशील, अभिज्ञान शाकुण्तलम में भी चित्रों का उलेख मिलता है। जिसमें विक्रमोवशील में विमानों पर इतने सतरंगें चित्र अंकित होने का वर्णन है।

मालविकागिरिन्द्र में लेखाचार्य द्वारा गीतों से चित्र बनाने का उलेख है। अभिज्ञान शाकुण्तलम में राजा दुष्यन्त को शाकुण्तला का चित्र बनाते हुये वर्णन किया है। राजशेखर के विद्वंद्वार्थिका नाटकों में समकालीन सामाजिक जीवन के हथियारों का भी चित्रण मिलता है। विद्वंद्वार्थिका में एक उलेख के अनुसार राणी का नवयुक्त भरतीज कभी-कभी श्रेष्ठ महिलाओं के ब्रह्म प्राण कर नवयुक्ती जैसा बन जाता है जिसे देखकर चित्रकारों ने उसे लड़की समझकर दीवार पर उसका चित्र बनाया।चित्र इतना सजीव व यथार्थ था कि राजा भी भ्रमवश के उसे लड़की मान रहे।

नाट्यशास्त्र - छठी शताब्दी ईपूः भरतमुनि द्वारा लिखित नाट्यशास्त्र में सभी भावों, रसों व मुद्राओं का वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया है। साथ ही रंगभंड की दीवारों पर चित्र बनाने के बारे में भी बताया गया है कि नाटककार के लिये रंगों के उचित ज्ञान व महत्त्व के बारे में बताते हुये रंगों का वर्णन सूक्ष्म रूप से किया गया।
है कि किस अवसर पर किन-किन रंगो का उपयोग करें व देवताओं एवं पार्श्वों को किन रंगो से रंग जायें। इन सभी बातों का उल्लेख नाटकशास्त्र में मिलता है।

रामायण पर आधारित भाष के नाटक प्रतिमानात्मक तथा भवभूति के उत्तमरामचरित में राम के जीवन पर आधारित नाटक में महलों की दीवारों पर राम के जीवन से सम्बंधित दर्शन का अंकन करने का उल्लेख मिलता है। भाष के नाटक दूर्वाक्यम में और तथ्यात्मक के चीहरण के पत्र-चित्र को दरबार में लाकर खोजे जाने का उल्लेख है जिसमें यह अनुमान लगाया जा सकता है कि चित्रों की रचना चित्रकार व फलक पर भी की जाती थी। भाष के प्रतिमानात्मक में एक व्यक्ति की एवं ममता के काव्यप्रकाश में एक पालतू तोते का वर्णन है, जो एक पराजित राजा के द्वारा छोड़ जाते जा पर एक सुननाम महल की दीवार पर चित्रित राजकुमारी और उसकी सजियों के चित्रों को भ्रमण सजीव समझकर उससे अपने लिये दाना चुगने की याचना कर रहा है।

श्री हर्ष ने दीक्षाप्राप्ति में दस्तयंति के जीवन-वृत्तांत चित्रण का उल्लेख किया है। सातवीं शती के महाभारत बाण ने अपनी कृति हर्षवर्धन में समाप्त हर्षवर्धन की बहन राजश्री के विवाह के अवसर पर महल की दीवारों की चित्रों द्वारा सजाये जाने का उल्लेख है। महाभारत (600 ई पूर्व - 500 ई पूर्व) - इस महाकाव्य में समझने के सबसे महत्वपूर्ण बात है कि उसका भवन से ही घोड़े का शोक था। जब रहते थे यह अपने माता-पिता के साथ मिटटी के घोड़े बनाने के साथ-साथ उसके चित्र भी बनाता था इसीलिये उसका नाम चित्राभास पड़ गया।

इस काव्य में एक और प्रसंग उषा व अनिरुद्ध का था। जिसमें राजकुमारी उषा ने अपने स्वप्न में एक सुंदर युवक को अपने साथ वापसी में बिहार करते हुए देखा और उससे प्रेम करने लगी। बात: जामकर राजकुमारी युवराज की स्तुति में दू-दूं ओकर एकान्त में बली गयी जब इस घटना के बारे में उसकी परिचालिता चित्रलेखा की पता चला तो उसने समस्त महावरुणों, देवताओं और उस समय के सभी युवकों के छवि चित्र अपनी स्तुति से बनाये और उन्हें उसके समुद्र रख दिया। उषा ने स्वप्न में आये युवक की पहचान लिया जो कृष्ण के प्रपोत्य अनिरुद्ध था। इस प्रकार कथाओं के माध्यम से स्तुति चित्र बनाने का उल्लेख है।

एक प्रसंग में युविन छोटी की सभा का रोचक वर्णन है। जिसके अन्तर्गत जहाँ सभा भवन की दीवार में दरवाजा दिखाई देता था वहाँ दरवाजा नहीं था और जहाँ दरवाजा दिखाई नहीं देता था वहाँ दरवाजा था। जिसके कारण दरियाँ बने। इसी भवन में एक महान दीवार पर ऐसी चित्र बनाया गया है, जिसमें एक
सच्चा दरवाजा खुला दिखायी पड़ता था लेकिन जब कोई उसमें प्रवेश करता तो उसका सिर दीवार से टकरा जाता था।

उद्देश्य

प्राचीन ग्रन्थों से चित्रकला का परिचय, प्राचीन ग्रन्थों के नियमों से अवगत, प्राचीन ग्रन्थों के नियमों का पालन करते हुये आधुनिक कला में उसका महत्व।

संदर्भ

[1] चंद्रकेश, जगदीश, पुराणकालीन रूपकर कलाएँ, पुराण साहित्य में चित्र, मूर्ति और वास्तु का अनुशासन एवं समसामयिक कला - परम्परा का संदर्भ, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, 2010
[3] बही, पृष्ठ 12
[4] पुराणकालीन रूपकर कलाएँ, पृष्ठ 125
[5] गौरोला, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, भारत प्रकाशन प्राइवेट लिटी, इलाहाबाद, 1963
[6] पुराणकालीन रूपकर कलाएँ, पृष्ठ 128